International Journal of Educational Research and Studies
www.multiinnovationjournal.com
Online ISSN: 2664-6811, Print ISSN: 2664-6803
Received: 04-07-2025, Accepted: 05-08-2025, Published: 20-08-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 33-37

# माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा केप्रति सामाजिक मूल्यों का अध्ययन

**प्रवीण कुमार सिंह[1], डॉ. सत्यवह द्विवेदी[2]**
[1] शोधार्थी, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शिक्षा विभाग, हलीम मुस्लिम पी.जी. कॉलेज, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

**सारांश**
समावेशी शिक्षा केवल एक शैक्षणिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह एक शक्तिशाली सामाजिक दर्शन है जो एक समतामूलक और न्यायप्रिय समाज की नींव रखती है। शिक्षक/शिक्षिकों की समावेशी शिक्षा के सामाजिक मूल्यों की जानकारी किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम को प्रारम्भ करने की कुंजी होती है।
ऐसे में शिक्षक/शिक्षिकों की समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सभी मूल्यों विशेषकर सामाजिक मूल्यों की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि यदि शिक्षक/शिक्षिकों की समावेशी शिक्षा के सामाजिक मूल्यों का ज्ञान नहीं होगा तो वह अपने विद्यालयों की कक्षा–कक्ष में इसका व्यावहारिक रूप से प्रयोग करने में असमर्थ होंगे।
प्रस्तुत शोध पत्र माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन से जुड़े सामाजिक मूल्यों की स्थिति और उनके महत्व का विश्लेषण करने पर केन्द्रित है। समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए आवश्यक है कि शिक्षक न केवल विशिष्ट कौशल से युक्त है, बल्कि उनमें समानता, विविधता के प्रति सम्मान संवेदनशीलता और सामाजिक न्याय जैसे अर्न्तनिहित मूल्य भी मौजूद है।
इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्य किस स्तर तक विकसित हुए है और इन मूल्यों का समावेशी कक्षा प्रबन्धन पर क्या प्रड़ता है साथ ही यह उन सम्भावित कारकों की पहचान करता है जो उन मूल्यों के विकास को प्रभावित करते है जैसे कि शिक्षक प्रशिक्षण, अनुभव या विद्यालय का वातावरण।
इस अध्ययन मे मात्रात्मक शोध विधि के विवरणात्मक सर्वे अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में उपकरण के रूप में स्वनिर्मित सामाजिक मूल्य मापनी का प्रयोग कर आंकड़ों को संग्रहित किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में माध्यमिक विद्यालय स्तर के 128 शिक्षक/शिक्षिकाओं को सम्मिलित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों, विज्ञान और कला वर्ग के विषयों तथा पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं का समावेशी शिक्षा के प्रति सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

**मुलशब्द:** समावेशी शिक्षा, शिक्षक/शिक्षिका, सामाजिक मूल्य, सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालय।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समावेशी शिक्षा एक मौलिक आवश्यकता बन गई है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक बच्चा, अपनी क्षमताओं या अक्षमताओं की परवाह किए बिना मुख्यधारा की शिक्षा में सम्मान और समानता के साथ भाग ले सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 कई शैक्षिक नीतियाँ, समावेशी वातावरण को बढ़ावा देने पर जोर देती है।
समावेशी शिक्षा की सफलता केवल विशेष बुनियादी ढ़ाँचे या पाठ्यक्रम अनुकूलन पर निर्भर नहीं करती, बल्कि सबसे महत्वपूर्ण रूप से कक्षा का संचालन करने वाले शिक्षकों के दृष्टिकोण और सामाजिक मूल्यों पर निर्भर करती है। माध्यमिक स्तर जहाँ छात्र, सामाजिक और भावनात्मक रूप से जटिल विकास के दौर से गुजरते है यहाँ शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षकों में समानता, विविधिता के प्रति सम्मान संवेदनशीलता और सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों का होना आवश्यक है ताकि वे एक समावेशी संस्कृति का निर्माण कर सकें।
इस संदर्भ में यह शोध माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों में समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों की वर्तमान स्थिति का गहन अध्ययन करने का प्रयास करता है। यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि शिक्षक समावेशी दर्शन को किस हद तक आंतरिक रूप से अपनाते है और उनके ये मूल्य उनकी शिक्षण पद्धतियों और कक्षा प्रबन्धन को कैसे प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन समावेशी शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए शिक्षकों के मूल्य आधारित प्रशिक्षण के सुधार हेतु महत्वपूर्ण अंर्तदृष्टि प्रदान करेगा।

## सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

समावेशी शिक्षा की सफलता शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों, अभिवृत्ति और क्षमता पर निर्भर करती है। सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा इस बात पर प्रकाश डालती है कि विभिन्न संदर्भों में शिक्षकों के मूल्य समावेशी व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

**भटनागर एवं दास, 2014 "एट्टीट्यूड ऑफ सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स टुवडर्स इन्क्लूसिव एजुकेशन इन न्यू दिल्ली, इंडिया ए क्वालिटेटिव स्टडी"** समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अध्ययन है। यह शोध विशेष रूप से शिक्षकों की अभिवृत्ति और आत्मक्षमता की धारणा के बीच मौजूद द्वंद को उजागर करता है। इसमें दिल्ली के माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का गुणात्मक अध्ययन किया गया। इसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) को निम्नांकित कक्षाओं में शामिल करने पर शिक्षकों के विश्वासों, भावनाओं संभावित व्यवहारों की जांच की गई।

**वर्मा एवं मिश्रा, 2022 "सहयोगात्मक शिक्षण और सामाजिक मूल्यों का विकास"** इस अध्ययन का उद्देश्य सहयोगात्मक शिक्षण विधियों का सामान्य छात्रों में विशिष्ट आवश्यकता वाले छात्रों के प्रति सहानुभूति और सामाजिक मेलजोल के मूल्यों के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करना। शोधकर्ता ने सहयोगात्मक शिक्षण विधियों (जैसे समूह कार्य, पीयर ट्यूटरिंग, संयुक्त समस्या समाधान) के माध्यम से छात्रों के सामाजिक मूल्यों में आए परिवर्तन को मापा।

**कैंपबेल एट अल, 2003, फोर्लिन 2004 ''सकारात्मक और व्यवहार के द्वन्द''** शोध विषयों में समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों के सामने आने वाले एक महत्वपूर्ण विरोधाभास को उजागर करते है, शिक्षक समावेश के सामाजिक मूल्यों को मानते है, लेकिन व्यवहार में उन्हें लागू करने के लिए संघर्ष करते हैं। यह द्वन्द दर्शाता है कि शिक्षकों के आंतरिक सामाजिक मूल्य (समानता, सम्मान) उनके पास कार्य वातावरण की कठोर वास्तविकताओं के कारण कैसे बाधित हो जाते हैं।

## अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन हेतु अध्ययनकर्ताओं द्वारा निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए।

1. सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्य का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

## परिकल्पना

1. सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन मात्रात्मक शोध विधि के अंतर्गत विवरणात्मक सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है।

## प्रतिदर्श

प्रतिदर्श के रूप में कानपुर नगर के दस विकास खण्डों से चार विकास खण्ड (भीतरगांव, घाटमपुर, कल्यानपुर, शिवराजपुर) में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से 128 शिक्षक/शिक्षिकाओं का चयन किया गया।

## प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित सामाजिक मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया। सामाजिक मूल्य मापनी की विश्वसनीयता 8.2 है।

## अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

आंकड़ों के विश्लेषण के लिए वर्णात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है। जिसमें मध्यमान एवं मानक विचलन ज्ञात कियागया है। इसके अतिरिक्त दो चरों के मध्य अंतर का विश्लेषण करने हेतु टी–परीक्षण का उपयोग किया गया है।

## आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण

### उद्देश्य 01

सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति सामाजिक मूल्य का अध्ययन करना।

### परिकल्पना 01

सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति सामाजिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**तालिका संख्या 1:** सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक शिक्षा के प्रति सामाजिक मूल्य की तुलना

| चर | मध्यमान | मानक विचलन | संख्या | स्वतंत्रांश df | टी–मान |
|---|---|---|---|---|---|
| सरकारी विद्यालय शिक्षक | 34.42 | 7.37 | छ$_1$64 | 126 | 0.048 |
| निजी विद्यालय शिक्षक | 31.84 | 7.24 | छ$_2$ 64 | | |

सार्थकता स्तर .05

**ग्राफ संख्या 1**

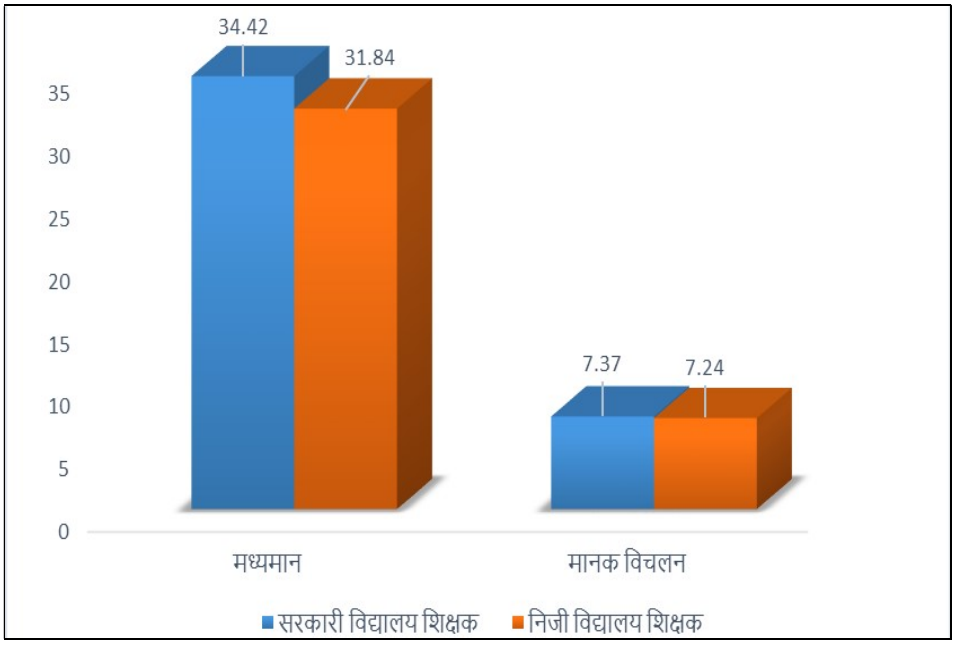


उपरोक्त तालिका 01 एवं ग्राफ संख्या–01 से स्पष्ट होता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का मध्यमान 34.42 तथा मानक विचलन 7.37 है तथा निजी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का मध्यमान

31.84 तथा मानक विचलन 7.25 है तथा सभी का स्वतंत्रांश 126 है।

सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक मूल्य की तुलना करने पर प्राप्त हुआ यह टी मान .048 प्राप्त हुआ यह टी मान, जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है क्योंकि प्राप्त टी मान सारणी मान 1.98 से भी कम है। इससे स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में समावेशी शिक्षा के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना ''सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' को सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में अस्वीकृत नहीं किया जाता है।

**उद्देश्य 02**

माध्यमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

**परिकल्पना 02**

माध्यमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**तालिका संख्या 2:** माध्यमिक विद्यालयों में पुरूष व महिला शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति सामाजिक मूल्यों की तुलना

| चर | मध्यमान | मानक विचलन | संख्या | स्वतंत्रांश df | टी–मान |
|---|---|---|---|---|---|
| शिक्षक | 31.75 | 8.18 | $N_1$64 | 126 | 0.033 |
| शिक्षिका | 34.51 | 6.26 | $N_2$ 64 | | |

**सार्थकता स्तर .05**

**ग्राफ संख्या 2**

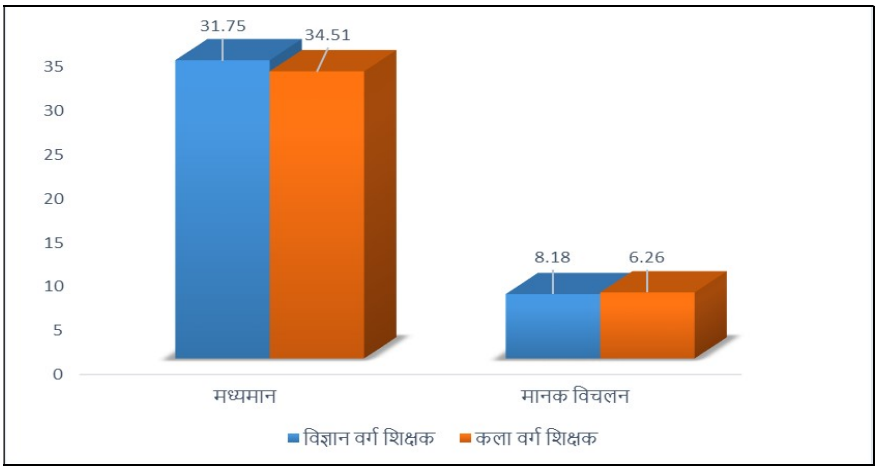


उपरोक्त तालिका संख्या–2 तथा ग्राफ संख्या–2 से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का मध्यमान 31.75 व 8.18 है तथा माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षिकाओं का मध्यमान 34.51 व मानक विचलन 6. 26 है। जबकि टी मान .69 है, जोकि 126 स्वतंत्रांश एवं .5 के सार्थकता स्तर पर सारणीकृत मान 1.96 से कम है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में अस्वीकृत नहीं किया जाता है।

**ग्राफ संख्या 3**

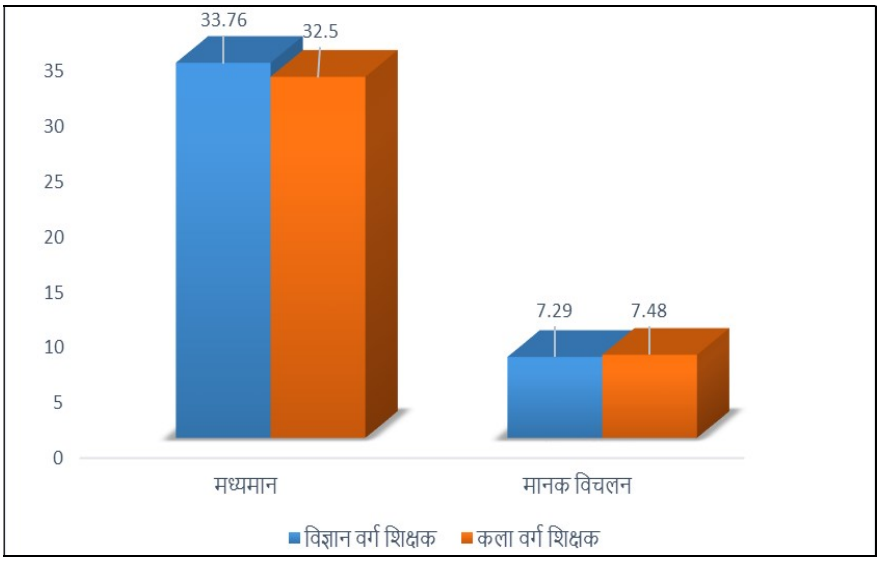

### उद्देश्य 03
माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

### परिकल्पना 03
विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**तालिका संख्या 3:** विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति सामाजिक मूल्यों की तुलना

| चर | मध्यमान | मानक विचलन | संख्या | स्वतंत्रांश df | टी–मान |
|---|---|---|---|---|---|
| विज्ञान वर्ग शिक्षक | 33.76 | 7.29 | $N_1$64 | 126 | 0.35 |
| कला वर्ग शिक्षक | 32.5 | 7.48 | $N_2$ 64 | | |

### सार्थकता स्तर .05
उपरोक्त तालिका संख्या–3 एवं ग्राफ संख्या–3 से स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग विषय के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के सामाजिक मूल्य का मध्यमान 33.76 तथा मानक विचलन 7.29 है जबकि माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग के शिक्षकों के मध्यमान 32.5 एवं मानक विचलन 7.48 है तथा सभी का स्वतंत्रांश 126 है। विषयों के आधार पर शिक्षकों कीसमावेशी शिक्षा के सामाजिक मूल्य की तुलना करने पर टी मान .33 प्राप्त हुआ। यह टी मान .05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत टी मान 1.96 से कम है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग के शिक्षकों की सामाजिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है'' को शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में अस्वीकृत नहीं किया जाता है।

### शोध निष्कर्ष
सांख्यिकीय आधार पर परिकल्पनाओं को स्वीकृत या अस्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार परिकल्पनाओं से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण करने से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए।

1. सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है अर्थात् सामाजिक मूल्य दोनों स्तरों के विद्यालयों के शिक्षकों में समान है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है अर्थात् सामाजिक मूल्य लगभग समान मात्रा में है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित बराबर सामाजिक मूल्य है।

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर न होने का प्रमुख कारण प्रतिदर्श का छोटा आकार एवं समावेशी शिक्षा एक नैतिक दर्शन और मानवाधिकार पर आधारित है, जिसका लक्ष्य समाज में समान अवसर और गरिमा सुनिश्चित करना है, इसलिए इसे लागू करने वाले शिक्षकों के लिए इसके सामाजिक मूल्य अनिवार्य रूप से समान हो सकते हैं।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गफूर, के.ए. एण्ड असरफ, पी.एम. (2009), इन्क्लूसिव एजुकेशन डुइज द रेगुलर टीचर एजुकेशन प्रोग्राम मेक डिफरेंस इन नॉलेज एण्ड एटीट्यूडस।
2. गुप्ता, एस.पी. (2003), अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय कार्यविधि व प्रविधि, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
3. झा, एम.एम. (2005), समावेशी शिक्षा दृष्टिकोण और प्रक्रियाएं (एन. नदीम अनुवाद), नई दिल्लीः प्रकाशन संस्थान (2003)
4. थामस, ई.के. एण्ड उथमन, एम.पी. (2009), नॉलेज एण्ड एटीट्यूड ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स टुवर्ड्स इन्क्लूसिव एजुकेशन ऑफ चिल्ड्रेन विथ स्पेसफिक लर्निंग डिसेबिलिटीज, जे. सोशल वर्क एड, प्राक्ट 4, 23–32
5. भारतीय, एस. शर्मा ए.के. (जुलाई–दिसम्बर, 2019), समावेशी शिक्षा के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान व कला संकाय के अध्यापकों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 38(2), 47–55
6. सुलैमान, एम. (2016), मनोविज्ञान शिक्षा एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी पटना : मोतीलाल बनारसीदास।